Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजस्थान की ठीकरी कला का ऐतिहासिक अध्ययन एवं संरक्षण

खुशबु झाला*

* छात्रा (इतिहास) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – उक्त लेख में मुगलों के संरक्षण एवं उसके बाद राजस्थान के राजपूत राजघरानों द्वारा संरक्षित ठीकरी कला के 'ऐतिहासिक अध्ययन' एवं उसके 'संरक्षण की आवश्यकताओं' पर विचार करने का प्रयास किया गया है। राजस्थान अपने इतिहास के साथ अपनी अलग–अलग कलाओं के इतिहास हेतु भी प्रसिद्ध है। इसी में से एक है 'राजस्थान के मेवाड़ की ठीकरी कला'। जिसमें 'शीशे की पच्चीकारी' अर्थात पत्थर में कांच के टुकड़ों की जडाई का कार्य किया जाता है। मेवाड़ रियासत की राजधानी उदयपुर क्षेत्र में 'हस्तशिल्पयों' द्वारा आज भी 400 वर्षो पुरानी राजा महाराजाओं के समय से चली आ रही ठीकरी कला को संरक्षित किया गया है। उक्त कला की कलाकारी राजस्थान के राजपूत राजघरानों के महलों, दुर्गो व मंदिरों में देखी जा सकती है। ठीकरी कला राजस्थान के प्रमुख हस्तशिल्प में से एक है। इसके कलाकारों को सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के समर्थन व संरक्षण की आवश्यकता है। वर्तमान में विदेशी पर्यटको द्वारा महलों व दुर्गो में ठीकरी कला के अप्रतिम कार्य को देख उसकी और आकर्षण एवं इस मनमोहक दृश्य को अपने संग विदेश ले जाने की चाह ने पुन: ठीकरी कलाकारों हेतु रोजगार की संभावनाओं को बढाया है।ठीकरी कला के छोटे नमूनों के रूप में साथ ले जाने से विदेश में परंपरागत ऐतिहासिक भारतीय हस्तशिल्प का प्रचार भी हो रहा है।

शब्द कुंजी – संरक्षण, ठीकरी, हस्तशिल्प, आकर्षण, परंपरागत।

प्रस्तावना – ठीकरी शब्द हिंदी के शब्द 'ठेकर' से लिया गया है जिसका अर्थ है दर्पण शिल्पी।राजस्थान के इतिहास में कई कलाओं ने अपना योगदान दिया है इसी में से एक है मेवाड़ की ठीकरी कला। जिसे आईनाकारी या मिरर वर्क भी कहा जाता है। इसमें शीशे के टुकड़ों को दीवारों से जोड़कर विभिन्न प्रकार का आकार दिया जाता है इसका प्रयोग बड़े स्तर पर मेवाड़ के सिटी पैलेस, राज दरबार, हवेलियों एवं जयपुर रियासत के आमेर के किले, जोधपुर एवं जैसलमेर के सिटी पैलेस व हवेलियो में सजावट हेतु किया गया है। इस कला की मुख्य विशेषता है की ठीकरी कला द्वारा किए गए कार्य से महलों की सुंदरता बढ़ती है एवं ठीकरी कला शीशे की परावर्तक क्षमता के कारण अत्यधिक आकर्षक लगती है। अपने आकर्षण के कारण राजस्थान के राज घरानों के महलों एवं हवेलियां व मंदिरों की शोभा बढ़ाती है। शीशे को अक्सर राजघरानों द्वारा शाही सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जाता था इसीलिए ठीकरी कला में राजस्थान के राजपूत वंशों ने अपनी विलासिता की झलक को देखा एवं इसका प्रयोग अपने ऐतिहासिक स्मारको में किया।

ठीकरी कला की विधि – मुख्यत ठीकरी कला का प्रयोग पत्थर की दीवारों में शीशे के छोटे टुकड़ों की जडाई कर किया जाता है। इसमें छोटे औजारों से कांच को आकार में काटा जाता है फिर जो भी आकर देना है उसके अनुसार शीशे को चिपकाया जाता है।

ठीकरी हस्तशिल्प, छायाचित्र स.– 01

ठीकरी कला का इतिहास–भारत में सर्वप्रथम मुगलों द्वारा दर्पण शिल्प एवं शिल्पकारों को संरक्षण दिया गया। ठीकरी कला का सर्वप्रथम प्रयोग मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा 1631 में बनवाये गये, शीश महल, लाहौर में देखा जा सकता है।

शीश महल, लाहौर छायाचित्र स.– 02, 03

मुगल शासक द्वारा ठीकरी कला को उत्कीर्ण करने हेतु ठीकरी शिल्पकारों को पश्चिम बंगाल से बुलवाया गया एवं उन्हें संरक्षण दिया गया। किंतु ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के पश्चात मुगल साम्राज्य पतनोन्मुख होता गया एवं इन कलाकारों को संरक्षण मिलना बंद हो गया तथा रोजगार की तलाश में यह शिल्पकार राजपूताना की रियासतों मेवाड़, मारवाड़, जयपुर एवं शेखावाटी आदि क्षेत्रों में बस गए उसे दौरान राजपूत शासको द्वारा इन शिल्पकारों को संरक्षण दिया गया। राजपूत शासको के महलों, हवेलियां एवं मंदिरों में ठीकरी कला को एक नया रूप मिला। इसी दौर में समस्त राजपूत वंश के शासको ने इस कला का प्रयोग आरंभ किया, जिसे स्थापत्य कला एवं महलों व मंदिरों की सजावट आदि में प्रयोग किया गया। ठीकरी कला का प्रयोग लगभग 400 वर्ष के पूर्व से स्थापत्य विकास के साथ किया गया है। जो निरंतर पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित हुई अत: कहा जा

सकता है कि राजस्थान ठीकरी कला का उदगम केंद्र है एवं हस्तकला के इतिहास में राजस्थान का अनूठा एवं समृद्ध योगदान रहा है। ठीकरी कला जो समय के साथ राजपूत राज घरानों के संरक्षण में विकसित हुई उसका अभी भी क्रमिक विकास जारी है।

मेवाड़ रियासत के संदर्भ में ठीकरी कला–उदयपुर राजस्थान के मेवाड़ रियासत की राजधानी रही है जिसे महाराणा उदय सिंह द्वारा पिछोला के तट पर बसाया गया। इस परंपरागत विरासती शिल्प को उदयपुर के सिटी पैलेस एवं हवेलिया व मंदिरों में महाराणा द्वारा करवाए गए ठीकरी कला के कार्य को देखा जा सकता हैं। मेवाड़ में आज भी ठीकरी कला के 200 से अधिक कारीगर कार्यरत हैं जो इस वर्षों पुरानी कला को संरक्षित करते हैं।मेवाड़ रियासत की राजधानी रहे उदयपुर शहर में होटल उद्योग प्रमुख व्यवसायों में से एक माना जाता हैं एवं इन्ही होटलों में पर्यटकों को आकर्षित करने वाली परंपरागत ठीकरी कला द्वारा हेरिटेज लुक देने की बढ़ती मांग ने ठीकरी शिल्पकारो हेतु रोजगार के अवसर बनाएं हुए।जिस कारण भी मेवाड़ क्षेत्र में परंपरागत दर्पण शिल्प का कार्य जारी है।

सिटी पैलेस, उदयपुर छायाचित्र स. – 04, 05

जयपुर रियासत के संदर्भ में ठीकरी कला – राजस्थान का जयपुर शहर जिसकी स्थापना महाराजा मानसिंह द्वारा की गई। जयपुर रियासत के आमेर दुर्ग को यूनेस्को ने अपनी विश्व धरोहर स्थल में शामिल किया है।दुर्ग में ठीकरी कला का अद्भुत कार्य देखा जा सकता है। आमेर दुर्ग में भी शीश महल स्थित है जहां ठीकरी हस्तशिल्प में स्थापत्य का कार्य हुआ है।

आमेर दुर्ग, जयपुर छायाचित्र स.– 06, 07, 08, 09

शेखावाटी के संदर्भ में ठीकरी कला –शेखावाटी क्षेत्र में स्वतंत्रता के पूर्व जैन व्यापारियों एवं राजाओं द्वारा हवेलियों का निर्माण करवाया गया एवं उनकी सजावट हेतु ठीकरी कला का प्रयोग किया गया।उक्त हवेलियां आज अपने स्थापत्य एवं ठीकरी के अनूठे संयोजन के कारण पर्यटकों के आकर्षण की केंद्र है।

शेखावटी हवेलियां छायाचित्र स.– 10, 11, 12

जोधपुर रियासत के संदर्भ में ठीकरी कला – राजस्थान की जोधपुर रियासत पर राठौर राजपूत वंश का शासन रहा। जोधपुर रियासत में मेहरानगढ़ दुर्ग है जिसमें शीश महल बना हुआ है राजस्थान के सभी राजपूत दुर्गों के शीश महलों में जोधपुर के शीश महल की तुलना जयपुर के शीश महल से की जाती हैं।

शीश महल, जोधपुर छायाचित्र स. – 13

मेहरानगढ़ दुर्ग के शीश महल में ठीकरी कला एवं स्थापत्य का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है, यहां राजपूत स्थापत्य शैली का वास्तविक प्रयोग देखने को मिलता है।

जैसलमेर रियासत के संदर्भ में ठीकरी कला – जैसलमेर रियासत पर भाटी राजवंश का शासन रहा है एवं जैसलमेर के दुर्ग को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया है यह एक आवासीय दुर्ग है जहां दुर्ग के भीतर दुकान, होटल, हवेलिया है एवं दुर्ग के भीतर शहर बसा हुआ है।इन हवेलियां में ठीकरी कला द्वारा सजावट का कार्य जो वर्षों पूर्व किया गया था

संरक्षित है। जैसलमेर दुर्ग में भी शीश महल स्थित है एवं जैसलमेर की पटवो की हवेली ठीकरी कला के लिए आकर्षण का केंद्र है।दुर्ग के भीतर बसे शहर में आज भी ठीकरी कला के शिल्पी दर्पण शिल्पकारी का कार्य करते हैं।जैसलमेर में दो प्रकार के मिरर वर्क प्रसिद्ध है। जिसमे प्रथम दीवारों पर एवं द्वितीय कपड़ो पर भी शीशे का कार्य किया जाता है उसे भी मिरर वर्क ही कहा जाता है कपड़ो पर किये जाने वाले शीशे के उत्कृष्ट कार्य हेतु जैसलमेर प्रसिद्ध है तथा उसके साथ ही दीवारों पर दर्पण शिल्प में भी जैसलमेर सदैव राजस्थान के प्रमुख राजपूत राजवंशो में शामिल रहा है।

पटवो की हवेली, जैसलमेर छायाचित्र स. – 14

परंपरागत ऐतिहासिक स्मारकों में रूपांकन– ऐतिहासिक शिल्पियों द्वारा मोर, पुष्प, जानवर व देवता एवं ज्यामितीय डिजाइनों का प्रयोग ठीकरी कला में सजावट हेतु किया जाता था। वर्तमान में इसमें कई नए प्रयोग शामिल किया जा रहे हैं।

ठीकरी की विशेषताएं:

1. ठीकरी कला में सजावट हेतु रंग–बिरंगे दर्पण के टुकड़ों का प्रयोग किया जाता है शीशे अपनी परावर्तक क्षमता के कारण चमक को बढ़ाते हैं जो अद्भुत एवं दृश्यमय होती है।जिससे विलासिता का आभास होता है एवं इसका अनुभव राजस्थान के राजपूत दूर्गो एवं महलों से किया जा सकता है।
2. राजस्थान के सभी राजपूती दुर्ग के शीश महलों में ठीकरी शिल्प उत्कीर्णित होने का एक और कारण यह भी हैं की सर्दी के मौसम में तापमान के स्तर को बनाए रखने हेतु भी इसका प्रयोग किया जाता था।
3. राजस्थान के राज घरानों द्वारा ठीकरी के कलाकारों को संरक्षण देकर एक अनूठी हस्त शिल्प कला को संरक्षित किया गया एवं रोजगार हेतु इसे एक पेशे के रूप में विकसित किया।

ठीकरी शिल्पकारों का समुदाय –परंपरागत इतिहास के अनुसार सुथार और मुस्लिम समुदायों के शिल्पकारों द्वारा शीशे की पच्चीकारी का कार्य किया जाता था। किंतु समय के साथ यह कार्य इन्हीं समुदायों तक सीमित नहीं रहा एवं अन्य हस्तशिल्प समुदायों तक विस्तारित हुआ।

परंपरागत ऐतिहासिक हस्तशिल्प व्यवसाय के रूप में –स्वतंत्रता से पूर्व ठीकरी कला राजस्थान के राजघरानों के दरबारों, महलों एवं हवेलियों व मंदिरों की शोभा बढ़ाती थी।स्वतंत्रता के बाद उन्ही हवेलियों के होटल उद्योग में बदलने के साथ यह पर्यटकों को आकर्षित करने का जरिया बना। जिसके कारण इस कला का प्रयोग आज होटल एवं घरों की सजावट हेतु किया जाने लगा है जिससे लोगों को रोजगार मिला एवं ऐतिहासिक हस्तशिल्प को प्रोत्साहन मिला।

ठीकरी कला को संरक्षण की आवश्यकता:

1. ठीकरी कला एक हस्तशिल्प है जिसमें अत्यधिक हस्तशिल्पियों की आवश्यकता होती है क्योंकि इस कार्य को अत्यधिक बारीकी से किया जाता है जिस कारण यह मशीनों से निर्मित वस्तुओं के मुकाबले बनने में अत्यधिक समय भी लेती हैं एवं इसका शिल्प मशीन निर्मित शिल्प से महंगा है, जिस कारण इस कला के शिल्पकारों को कार्य की शुरुआत एवं उसे आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहन एवं सरंक्षण की आवश्यकता है।
2. ठीकरी कला का ऐतिहासिक स्थानों जैसे सिटी पैलेस व दुर्ग में किया गया कार्य विदेशी पर्यटको को काफी रोचक लगता है तथा उनके द्वारा इसके नमूने को अपने साथ खरीद विदेश ले जाने की चाह में ठीकरी का कार्य करने वालो की मांग बढ़ रही है। यदि शिल्पकारों को उचित प्रोत्साहन मिले तो वे इस परंपरागत ऐतिहासिक शिल्प को संरक्षित करने एवं पेशे के रूप में अपनाने हेतु प्रोत्साहित होंगे।जो विदेशी पर्यटकों को भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात में भी वृद्धि करेगा एवं भारतीय हस्त शिल्प व संस्कृति का विदेश में प्रचार होगा।
3. उक्त कला के शिल्पी हमारे समर्थन की कमी के कारण इसे जारी रखने में अत्यधिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं जो भावी पीढ़ी को इसे अपने पेशे के रूप में चुनने एवं आगे बढ़ाने में शंकाग्रस्त कर देती है। अत: गैर सरकारी एवं सरकारी संगठनों द्वारा दिया प्रोत्साहन ठीकरी कला को भावी पीढ़ी से परिचित कराने एवं उन्हें भारतीय हस्तशिल्प के इतिहास के पहलू को समझने में योगदान देगा।
4. स्वतंत्रता के पश्चात राजा महाराजाओं ने अपनी हवेलियों को होटल उद्योग में बदल हेरिटेज लुक दिया जिस कारण विदेशी पर्यटक हेरिटेज लुक की तरफ आकर्षित हुए एवं हेरिटेज लुक की मांग बढ़ने लगी एवं ठीकरी कला के शिल्पियों की मांग पिछले एक दशक में बढ़ी है।यदि ठीकरी शिल्पकारो को सरंक्षण मिलेगा तो भावी पीढ़ी इसे रोजगार का साधन बनाने हेतु तैयार होगी

निष्कर्ष – ठीकरी कला का विशेषत: प्रयोग राजपूत राज घरानों द्वारा किया गया। राज घरानों द्वारा ठीकरी के कलाकारों को खूब संरक्षण मिला एवं उन शिल्पकारों के उत्कृष्ट कार्यों को उस समय के प्रत्येक राजपूत स्थापत्य शैली के महल, दुर्ग व मंदिर जैसे मेवाड़, मारवाड़, जयपुर, शेखावाटी, जैसलमेर रियासतों के सिटी पैलेस, दुर्गो एवं शीश महलो मंदिरों में रंग–बिरंगे शीशे की पच्चीकारी व सजावट द्वारा देखा जा सकता है। इतिहासकारों द्वारा भारतीय कला और परंपरागत शिल्प की ठीकरी कला पर विशेषत: ऐतिहासिक लेखन नहीं किए जाने के कारण ठीकरी कला के संबंध में अत्यधिक इतिहास नहीं मिलता है।अत: ठीकरी कला पर ऐतिहासिक लेखन की आवश्यकता है तभी ठीकरी कला को प्रकाश में लाया जा सकता है एवं इसके सरंक्षण के विचार को प्रसारित किया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Mishra, Minakshi, and Babel, Sudha “Enamoring Rajasthan’s Heritage: Thikri craft, (2021) IJCRT, Volume 9
2. https://orvi.com/pages/thikri-art-collection
3. https://www.luxuryhandicrafts.in/collections/thikri-glass-inlay#:~:text=Thikri%20is%20traditional%.
4. https://www.kalpane.in/lilly-thikri-gold-and-silver-wall-accent.html
5. https://khojcrafts.com/blogs/blog/sheesh-mahal-thikri-art-and-a-khoj-for-indias-craft-traditions
6. https://asiainch.org/craft/thikri-mosaic-inlay-of-rajasthan/

7. https://miradorlife.com/traditional-indian-art-forms-why-are-they-disappearing/
8. https://www.abplive.com/states/rajasthan/thikari-fine-art-of-mewar-rajasthan-is-hundreds-of-years-old-decoration-items-are-made-by-pieces-of-glass-2428162
9. https://www.ifaaonline.com/thikri-art/
10. https://www.jagran.com/rajasthan/jaipur-unique-fine-art-of-mewar-gives-royal-look-19950572.html
11. https://hindi.news18.com/news/rajasthan/udaipur-mewars-unique-tikri-art-made-of-glass-piecesdemand-increases-abroad-6431795.html

छायाचित्र सन्दर्भ :-

1. https://orvi.com/pages/thikri-art-collection
2. https://architecturaltimes.news/sheesh-mahal-legendary-palace-of-mirrors/
3. https://x.com/authindia/glassinlayaroundganeshtemplecitypalaceudaipurstatus=en
4. hhttps://x.com/authindia/status/1443539250490732546?lang=en
5. https://www.pinterest.com/pin/rose-gate-photograph-jaipur-palace-jaipur-rajasthan
6. https://www.tripsavvy.com/shekhawati-rajasthan-travel-guide-1539655

****